Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन

शिवाश्रेय यादव
एम0ए0, एम0एड्0, नेट
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (उ0प्र0)

डॉ0 प्रेम चन्द यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, बी0एड्0 विभाग, श्री गाँधी
पी0जी0 कालेज, मालटारी, आजमगढ़

सारांश– अध्ययनकर्त्ता द्वारा परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। समस्या कथन के अन्तर्गत परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जनपद स्थित महाविद्यालयों के परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में कुल 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में दैव–निदर्शन विधि से चयनित किया गया, जिसमें से कुल 600 विद्यार्थियों जिसमें 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का चुनाव किया गया है। प्रदत्तों में प्रत्येक प्रश्न के प्रत्येक बिन्दु पर उत्तर प्राप्त किया गया है। परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता मापन सूची– डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव तथा परास्नातक स्तर की परीक्षा के प्राप्तांकों के प्रतिशत को यहाँ समंकों के रूप में प्रयुक्त किया गया है। छात्र एवं छात्राओं पर इस मापनी को प्रशासित कर आँकड़ों का संग्रहण किया तत्पश्चात् उनका सारणीयन करते हुए प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु एनोवा (प्रसरण) विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों तथा छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव पाया गया जबकि छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव नहीं पाया गया।

की–वर्ड– परास्नातक, छात्र, छात्राएँ, सामाजिक परिपक्वता, शैक्षिक निष्पत्ति, प्रभाव, एनोवा, टी–अनुपात।

प्रस्तावना– सामाजिक परिपक्वता से तात्पर्य समाज के नियमों, कार्यप्रणाली, एवं समाज के सभी अभिकरणों के प्रति सम्पूर्ण जानकारी का ज्ञान होने से है। विकास के प्रारंभिक अवस्था में ही परिपक्वता प्रारम्भ हो जाती है, जबकि कुछ पक्षों में परिपक्वता बाद में आती है। विकास की प्रक्रिया अधिगम एवं परिपक्वता पर निर्भर करता है जो व्यक्ति में निहित आतंरिक एवं वाह्य शक्तियों से सम्बंधित होता है। संस्कृति और सामाजिक परिपक्वता में अंतर्वैक्तिक सम्बन्ध पाया जाता है।

एक सामाजिक परिपक्व वयस्क कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं को दर्शाता है। वह अपने आपको अपने साथियों के समूह में सफलतापूर्वक अनुकूलित करने में सक्षम होता है और साथ ही अपने आपको साथी बनाने के लिए सक्षम भी होता है। इसमें समूह संगतता, दयालुता, सहानुभूति, निष्पक्ष खेल भावना के प्रति समायोजन, शिष्टाचार, राजनीतिक–निर्भरता, आत्मविश्वास, सहयोग, नेतृत्व और हंसमुखता जैसे व्यवहार के रूप शामिल हैं।

इस प्रकार, सामाजिक परिपक्वता सामाजिक वातावरण के प्रति विस्तृत अवधारणा की अनुमति देता है, जो विद्यार्थियों को सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावित करने और सामाजिक व्यवहार के सामाजिक प्रणाली विकसित करने में मदद करता है। समाज और विद्यार्थी दोनों एक दूसरे की जरूरत है, जितनी जरुरतें विद्यार्थियों को समाज की है उतनी ही जरुरत समाज को विद्यार्थियों की भी है, विकास के बारे में यदि बात करते है तो यह ज्ञात होता है कि समाज विद्यार्थियों के लिए प्रारंभिक चरण में कार्य और संरचना में परिपक्वता लाने का कार्य करता है जिससे कि एक विद्यार्थी के आंतरिक और वाह्य दोनों बलों में परिपक्वता

और सीखने की शक्ति का विकास हो सके, जो विद्यार्थियों के भविष्य को सवारने का कार्य कर सके, यदि हमें सामाजिक रूप से परिपक्व विद्यार्थी को परिभाषित करना है तो उसे समूह की इच्छा के हित में अपनी भूमिका के बारे में अच्छी तरह से अवगत होना चाहिए, सामाजिक जीवन में तालमेल रखने में सक्षम होना चाहिए, निष्पक्षता के साथ खेलना चाहिए, दूसरों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए, जिसे अनुरूपता स्थापित करने में आसानी हो सके। विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता बचपन से कुशल स्थिति के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार को समझने एवं उसके प्रति कार्य करने में सहयोगी की भूमिका प्रदान करती है। यदि विद्यार्थी समाज में उपयुक्त रूप से कार्य करने में असमर्थ है, तो वह सामाजिक स्थिति में अपरिपक्व हो सकता है। अपरिपक्व विद्यार्थियों का सामाजिक और पारिवारिक संबंध स्वीकार्य नहीं हो सकता है, लेकिन एक सामाजिक रूप से परिपक्व विद्यार्थी समाज के साथ सदभाव के रूप में भी पहचाना जाता है और उसके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य समाज और राष्ट्र के विकास में मिल का पत्थर साबित हो सकता है।

जन्म के समय शिशु में सामाजिकता प्रायः शून्य होती है। जैसे–जैसे उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है, वैसे–वैसे उसका सामाजिक विकास भी होने लगता है। वह अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों तथा अन्य व्यक्तिओं के संपर्क में आने के फलस्वरूप वह सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं एवं रुढियों आदि के अनुरूप व्यवहार करना सीख जाता है तथा सामाजिक वातावरण में अपने आप को समायोजित करने का प्रयास करता है। समाजीकरण की इस प्रक्रिया से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा वह सामाजिक रूप से परिपक्व होने लगता है,जिससे कि वह सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी आवश्यकताओं व् रुचियों पर नियंत्रण करने लगता है तथा अन्य विद्याथियों के प्रति प्रभावपूर्ण ढंग से सामाजिक सम्बन्धों को स्थापित करने में सफल रहता है। सामाजिक परिपक्वता से विद्यार्थी विद्यालय में एक सहयोगी, उपयोगी एवं कुशल मित्र बनाने में सफल रहता है।

सामाजिक परिपक्वता की प्रक्रिया विद्यार्थी के सामाजिक विकास को गति प्रदान करता है और वह विद्यार्थी जीवन में आने वाली प्रत्येक गतिविधियों का सही ढंग से निर्वहन करने में सफल हो सकता है। विद्यालय में उसके द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक कार्य उसकी सामाजिक परिपक्वता से प्रभावित होता है।

अतः अध्ययन के द्वारा यह देखने का प्रयास किया गया है क्या परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव पड़ता है या नहीं?

समस्या कथन–

परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य–

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

- परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- परास्नातक स्तर के छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- परास्नातक स्तर के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना– अध्ययन में उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

- परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाली छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि– समस्या कथन के अन्तर्गत **परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन** किया। प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जनपद स्थित महाविद्यालयों के परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में कुल 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में दैव–निदर्शन विधि से चयनित किया गया, जिसमें से कुल 600 विद्यार्थियों जिसमें 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का चुनाव किया गया है। प्रदत्तों में प्रत्येक प्रश्न के प्रत्येक बिन्दु पर उत्तर प्राप्त किया गया है। परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों में **सामाजिक परिपक्वता मापन सूची– डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव** तथा परास्नातक स्तर की परीक्षा के प्राप्तांकों के प्रतिशत को यहाँ समंकों के रूप में प्रयुक्त किया गया है। छात्र एवं छात्राओं पर इस मापनी को प्रशासित कर आँकड़ों का संग्रहण किया तत्पश्चात् उनका सारणीयन करते हुए प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु एनोवा (प्रसरण) विधि का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1. परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन–

H_{01} **परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

सारिणी सं0 1

परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का एफ–अनुपात

स्रोत	Df	SS	MS	F	सार्थक/असार्थक
समूहों के मध्य	2	4335.20	2167.60	17.10*	सार्थक
समूहों के अन्दर	597	75677.94	126.76		
कुल	**599**	**80013.14**	**2294.36**		

उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले परास्नातक के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य एफ–अनुपात का मान 17.10 है जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''परास्नातक स्तर के बेहतर, औसत एवं खराब सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है'', .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः प्रदर्शित करते हैं कि परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में असमानता है।

सारिणी सं0 1.1

परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में अन्तर को दर्शाते टी–परिणाम

क्र.सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान
1.	उच्च	157	72.05	1.13	6.60	5.83*
	औसत	266	65.45			
2.	उच्च	157	72.05	1.23	4.67	3.78*
	निम्न	177	67.38			
3.	औसत	266	65.45	1.09	1.93	1.77
	निम्न	177	67.38			

* .05 स्तर पर सार्थक

परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान क्रमशः 72.05, 65.45 एवं 67.38 है। सार्थक युग्म तुलना के आधार पर परास्नातक स्तर के उच्च सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है जबकि औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में समानता है।

2. परास्नातक स्तर के छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन–

H_{02} परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 2

परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का एफ–अनुपात

स्रोत	Df	SS	MS	F	सार्थक/असार्थक
समूहों के मध्य	2	4908.40	2454.20	24.90*	सार्थक
समूहों के अन्दर	297	29277.99	98.58		
कुल	**299**	**34186.40**	**2552.78**		

उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले परास्नातक के छात्रों के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य एफ–अनुपात का मान 24.90 है जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है'', .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः प्रदर्शित करते हैं कि परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में असमानता है।

सारिणी सं0–2.1

परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में अन्तर को दर्शाते टी–परिणाम

क्र.सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान
1.	उच्च	76	73.98	1.41	9.36	6.65*
	मध्यम	144	64.62			
2.	उच्च	76	73.98	1.59	9.19	5.78*
	निम्न	80	64.80			
3.	मध्यम	144	64.62	1.38	0.17	0.12
	निम्न	80	64.80			

* .05 स्तर पर सार्थक

परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान क्रमशः 73.98, 64.62 एवं 64.80 है। सार्थक युग्म तुलना के आधार पर परास्नातक स्तर के उच्च सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की अपेक्षा बेहतर है जबकि औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में समानता है।

3. परास्नातक स्तर की छात्राओं सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन–

H_{03} परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाली छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0–3

परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाली छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का एफ–अनुपात

स्रोत	Df	SS	MS	F	सार्थक/असार्थक
समूहों के मध्य	2	956.97	478.49	3.18	सार्थक
समूहों के अन्दर	297	44681.40	150.44		
कुल	**299**	**45638.37**	**628.93**		

उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले परास्नातक की छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य एफ–अनुपात का मान 3.18 है जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाली छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है'', .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर के उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाली छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में अन्तर है।

निष्कर्ष– अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- उच्च सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।
- उच्च सामाजिक परिपक्वता वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति औसत एवं खराब सामाजिक परिपक्वता वाले छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।
- उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक परिपक्वता वाली छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में समानता है।

निष्कर्षतः परास्नातक स्तर के छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर सकारात्मक प्रभाव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस.पी. (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
2. गुप्ता, एस.पी. (2010). आधुनिक मापन तथा मूल्याकंन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
3. विजय लक्ष्मी अग्रवाल, सोशल मेच्योरिटी ऑफ एडोलसेन्स इन रिलेशन टू काग्निटिव एण्ड नॉन–काग्निटिव वैरीयेवल्स। सबस्ट्रैक्ट ऑफ रिसर्च स्टडीज बाई टीचर एजुकेशन इन्स्टीट्यूटस, वाल्यूम 5 द एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, बडोदरा, 2008, पू0 373.
4. शर्मा पी एवं ठाकुर बी : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक एवं सांवेगिक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन, शोध प्रकल्प अंक 36 संख्या–3 जुलाई–सितम्बर 2006, वोल्यूम–6 ।